❖ तृतीय अध्याय

वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों की कथावस्तु

क – स्वप्नवासवदत्तम् की कथावस्तु

ख – प्रतिज्ञायौगन्धरायण की कथावस्तु

ग – रत्नावली की कथावस्तु

घ – प्रियदर्शिका की कथावस्तु

ङ – तापसवत्सराज की कथावस्तु

(क) स्वप्नवासवदत्तम् की कथावस्तु

स्वप्नवासवदत्तम् महाकवि भास का उत्कृष्ट कोटि का नाटक है। कथानक की दृष्टि से छः अंकों में विभक्त यह नाटक प्रतिज्ञायौगन्धरायण का अवशिष्ट भाग है। स्वप्नवाला दृश्य अत्यन्त आवश्यक है और संस्कृत नाटकों की पंक्ति में इस नाटक को अत्यधिक प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय बना देता है।

उज्जयिनी से राजा प्रद्योत की कन्या वासवदत्ता को हरण कर अपने राज्य में लाने के अनन्तर राजा उद्यन वासवदत्ता से विवाह करते हैं। राजा उदयन रानी वासवदत्ता में अतिशय आसक्त होकर राजकार्य में रूचि नहीं लेते। फलस्वरूप वत्सदेश के अधिकांश भाग पर उनके शत्रु आरूणि ने अधिकार कर लिया था। तब उस भाग में पुनः अधिकार पाने के लिए वत्सराज उदयन के मंत्री यौगन्धरायण ने मगधराज की पुत्री पद्मावती के साथ उदयन का विवाह कराने का उपाय सोचा। क्योंकि मगधराज दर्शन की सहायता राज्य प्राप्ति के लिए नितान्त आवश्यक थी। मंत्री यौगन्धरायण और रानी वासवदत्ता एक षड्यंत्र रचते हैं।

राज्य की पश्चिमी सीमा के निकट लावाणक नामक ग्राम में राजकीय पड़ाव डाल दिया। एक बार राजा शिकार खेलने गये तो उस ग्राम में आम लगवा दी। और षड्यन्त्र के अनुसार घोषणा कर दी कि इस अग्नि में रानी वासवदत्ता और मंत्री यौगन्धरायण जल गये। त्तपश्चात् वासवदत्ता और यौगन्धरायण वेश बदलकर मगध के एक तपोवन में पहुँचे। यहीं से वासवदत्ता की कथा प्रारम्भ होती है। अर्थात् स्वप्नवासवदत्ता नाटक की कथा का प्रारम्भ होता है।

प्रथम अंक में तपोवन का दृश्य है। अमात्य यौगन्धरायण ने स्वयं ब्राह्मण का वेश धारण किया तथा रानी वासवदत्ता वासवदत्ता को अपनी बहन अवन्तिका का वेश धारण कराया। मगधनरेश दर्शन की माता तपोवन में निवास कर रही हैं। उसी को देखने के लिए मगधनरेश की पुत्री पद्मावती आती है। पद्मावती तापसी के अनुरोध पर वहाँ के आश्रम पर ठहर जाती है। पद्मावती की आज्ञा से याचकों को मनोवांछित दान देने की घोषणा कंचुकी करता है। अवन्तिका के वेश में वासवदत्ता और ब्राह्मण के वेश में यौगन्धरायण आश्रम में आते हैं।

आश्रम में पद्मावती को देखकर यौगन्धरायण पद्मावती को अपने महाराज उदयन की होने वाली रानी समझता है। इस अवसर का वह लाभ उठाता है। वह पद्मावती के पास अपनी कल्पित भगिनी अवन्तिका (वासवदत्ता) को धरोहर के रूप में रख देता है। तापसी मगधनरेश की माता और पद्मावती वार्तालाप करते हैं। इस वार्तालाप में तापसी पद्मावती से विवाह के विषय में चर्चा करती है। तभी पद्मावती की दासी तापसी से कहती है कि उज्जयिनी के राजा महासेन के पुत्र के साथ राजकुमारी के विवाह सम्बन्ध की चर्चा चल रही है।

इसी समय वत्सदेश के लावाणक गाँव से एक ब्रह्मचारी लौट रहा था। वह आश्रम में विश्राम करने के लिए रूक जाता है। ब्रह्मचारी अपने वेदाध्ययन में हुए विघ्न का कारण लावाणक ग्राम में घटित दुर्घटना बताता है और कहता है कि लावाणक ग्राम में राजा उदयन ने अपनी पत्नी वासवदत्ता तथा मंत्री यौगन्धरायण के साथ राजकीय पड़ाव डाला था। एक बार राजा शिकार खेलने गए तो उस गाँव में आग लग गयी। जिसमें रानी वासवदत्ता और मंत्री यौगन्धरायण जल गये। शिकार से लौटने पर राजा उदयन वासवदत्ता एवं यौगन्धरायण के आग में जलने की खबर सुनकर अत्यधिक दुःखी हुए। राजा उदयन रानी वासवदत्ता के वियोग में प्राण त्यागना चाहते थे। परन्तु उनके आमात्यों द्वारा उन्हें ऐसा करने से रोका गया। ब्रह्मचारी इतना कहकर आश्रम से चला जाता है।

इस वृतान्त को सुनकर वासवदत्ता अपने प्रति अपने पति के आदर्श प्रेम को सुनकर बहुत सन्तुष्ट होती है। और पद्मावती भी उदयन के गुणों से प्रभावित होकर मन ही मन उदयन से प्रेम करने लगती है। यौगन्धरायण भी पद्मावती से आज्ञा पाकर वहाँ से चला जाता है। पद्मावती तापसी से अनुरूप वर की प्राप्ति का आर्शीवाद पाकर वासवदत्ता तथा निज परिवार, दासी के साथ राजमहल की ओर प्रस्थान करती है।

दूसरे अंक में पद्मावती और वासवदत्ता माधवी लतामण्डप के पास गेंद खेलती है। खेलने के पश्चात् वासवदत्ता पद्मावती से परिहास में कहती है, बहन अब तो तुम शीघ्र ही महासेन की बहू होगी। तभी पद्मावती की दासी एक रहस्य बताती

है कि भर्तदारिका पद्मावती महासेन से सम्बन्ध नहीं रखना चाहती। पद्मावती वत्सराज उदयन के गुणों से प्रभावित होकर उन पर आसक्त हो गयी है। उसी समय उपमाता आकर पद्मावती को बताती है। कि वत्सराज उदयन के साथ पद्मावती का विवाह तय हो गया है। फिर दूसरी दासी यह सूचना लेकर आती है कि आज ही विवाह की शुभ तिथि तथा शुभ घड़ी है। इन बातों को सुनकर वासवदत्ता को ठेस लगती है। और वह कहती है कि यह तो बड़ा बुरा हुआ तथा समाधान करती है। पहले तों उदयन अपनी पत्नी के लिए उन्मत्त था अब विरक्ता हो गया। तब दासी बताती है कि एक बार उदयन किसी प्रसंग से यहाँ आये थे। तो मगधराज ने अपनी इच्छा से अपनी कन्या पद्मावती उन्हें दे दी थी। इसके बाद सभी अन्तःपुर में चली जाती है।

तृतीय अंक में पद्मावती के विवाह की तैयारियाँ की जा रही हैं तथा सभी राजमहल में खुशियाँ मना रहे हैं। वासवदत्ता के लिए यह विवाह अत्यन्त दुःखदायी एवं असहनीय पीड़ा देने वाला था। वासवदत्ता अपनी आँखों के सामने अपने ही पति को पराया होते कैसे देख सकती थी। इसलिए वह विवाह उत्सव में सम्मिलित ना होकर राजमहल से निकलकर बाग में चली जाती है। वासवदत्ता को खोजती हुई एक दासी बाग में आती है।

दासी वासवदत्ता को पद्मावती का संदेश सुनाती है राजकुमारी पद्मावती ने कहा है कि आप महाकाल प्रसुता, स्निग्धा तथा निपुण हैं इसलिए आप मेरे लिए विवाह माला या कौतुक माला गूथें। विवशतः वासवदत्ता माला गूँथने लगती है परन्तु उस माला में वह अविधवाकरण औषण को ही गूँथती है सपत्नी मर्दन को नहीं। तभी दूसरी दासी आकर वहाँ से माला ले जाती है। वासवदत्ता अपने पति के साथ पद्मावती के विवाह होने से व्याकुल एवं अत्यन्त व्यथित होकर शान्ति पाने के लिए सोने का उपक्रम करती है।

चतुर्थ अंक में विदूषक रंगमंच पर उदयन और पद्मावती के विवाह सम्पन्न होने की सूचना देता है। विवाहोत्सव में नित्य नये–नये भोज्य पदार्थों तथा स्वादिष्ट मुलायम लडडू खाने से विदूषक को मन्दाग्नि हो जाती है। जिसे वह दासी के साथ

वार्तालाप में बताता है। रानी पद्मावती वासवदत्ता और एक दासी के साथ प्रमदवन में भ्रमण करने जाती है। प्रमदवन में वार्तालाप करते समय पद्मावती उदयन के प्रति अपने असीम प्रेम को प्रकट करती है। उसी समय वत्सराज उदयन तथा विदूषक भी भ्रमण करने के लिए प्रमदवन में आ जाते हैं। पद्मावती वासवदत्ता के साथ होने के कारण अपने पति से मिलना नहीं चाहती। इसलिए सभी लता कुंजों में छिप जाती हैं। बसन्तक उदयन से धूप से बचने के लिए लता कुंज में चलने को कहता है। लेकिन दासी वसन्तक और उदयन को आते देखकर प्रधान लता कुंज को जोर–जोर से हिला देती है। जिससे उसमें बैठे हुए सभी भौंरे उड़ने लगते हैं। भौरों के काटने के भय से दोनों लता कुंज में ना जाकर समीप रखे शिलाखण्ड पर बैठ जाते हैं। विदूषक बसन्तक राजा से पूछता है महाराज आप वासवदत्ता और पद्मावती में से किसको अधिक प्रेम करते हैं वासवदत्ता का स्मरण कराने के कारण राजा दुःखी होते हैं और उनकी आंखों से आँसू बहने लगते हैं विदूषक राजा के मुख धोने के लिए पानी लाने जाता है और उसी समय अनुकूल अवसर देखकर वासवदत्ता पद्मावती को राजा के पास भेज देती है। वासवदत्ता वहाँ से चली जाती है। पद्मावती राजा से आंखों में आँसू आने का कारण पूछती है राजा चतुरता से रहस्य छिपाते हुए कहते हैं मेरी आखों में काशपुष्प के पराग पड़ जाने से यह आँसू निकल रहे हैं। फिर पद्मावती राजा की आंखों को धोने लगती है। राजा को प्रणय संकट से बचाने के लिए विदूषक स्मरण दिलाता है कि उनको महाराज को तो मगधराज के सम्मानार्थ एक प्रीति उत्सव में जाना है। इसलिए शीघ्रता करें, राजा एवं वसन्तक वहाँ से चले जाते हैं।

पंचम अंक में पद्मावती शिरो–वेदना या सिर–दर्द से पीड़ित हैं। और वह समुद्रगृह में पड़ी हें। पद्मिनिका नामक दासी अपनी सखी मधुरिका को वासवदत्ता के पास यह संदेश देने भेजती है कि रानी पद्मावती शिरो वेदना से पीड़ित है। पद्मिनिका वसन्तक के द्वारा राजा के पास भी यह समाचार भिजवाती है। राजा उदयन अपनी पत्नी की शिरोवेदना का समाचार पाकर वहाँ आते हैं, जहाँ पद्मावती शिरो – वेदना के कारण शय्या पर लेट थी। परन्तु वहाँ पद्मावती को ना पाकर उसकी प्रतीक्षा में राजा उसी शय्या पर लेट जाता है और वसन्तक शीत ठण्डे से

बचने के लिए कम्बल लाने के लिए चला जाता है। इसी बीच वासवदत्ता पद्मावती से स्वास्थ्य लाभ पूछने आती है वह वस्त्रावृत राजा को पद्मावती समझकर उन्हीं की बगल में लेट जाती है। वासवदत्ता के हृदय में एक अपूर्व आनन्दोल्लास उठता है। वह आनन्दोल्लास को कारण ढूँढ़ना ही चाहती है कि राजा स्वप्न में वासवदत्ता का स्मरण करके बोलने लगता है। वासवदत्ता को राजा का शय्या में होने का ज्ञान होता है तो वह शय्या से उठ जाती है और अपने पति अर्थात् राजा के नीचे लटके हाथ को उठाकर शय्या पर रख देती है। प्रियतमा के हाथ का स्पर्श होने से राजा उठ जाता है और उसे पकड़ने के लिए भागता है लेकिन दरवाजे से टकराकर गिर जाता है। वसन्तक के कम्बल लेकर लौटने पर राजा उससे कहता है कि वासवदत्ता अभी जीवित है। वसन्तक इस घटना को स्वप्न अथवा अवन्तिसुन्दरी नामक यक्षिणी का दर्शन बताता है। इसी समय मगधराज दर्शक का कंचुकी वत्सराज उदयन के पास संदेश लाता है कि ''आपका सेनापति रूमण्वान् मगधेश्वर की सैन्य सहायता से आरूणि नामक शत्रु पर चढ़ाई करने के लिए आपकी प्रतीक्षा कर रहा है इसलिए आप शीघ्र–अतिशीघ्र युद्ध में जाने हेतु तैयार हो जाए। वत्सराज उदयन संदेश पाकर युद्धोचित उत्साह दिखलाते हुए लड़ाई के लिए प्रस्थान कर देता है।

षष्ठ अंक में राजा उदयन तथा मन्त्री रूमण्वान् आरूणि को परास्त कर वत्सदेश का अधिकांश छीना हुए राज्य अपने में वापस मिला देते हैं। संग्राम में विजयी होने के उपरान्त एक दिन उदयन की घोषवती नामक वीणा जो वासवदत्ता को अत्यन्त प्रिय थी, सूर्यामुख नामक प्रसाद में किसी व्यक्ति से प्राप्त हो जाती है। वासवदत्ता की वीणा को देखकर राजा विलाप करते हैं। इसी समय वासवदत्ता की धात्री या धायमाता वसुन्धरा और माता पिता द्वारा भेजा गया। कंचुकी युद्ध विजय के उपलक्ष्य में बधाई देने के लिए उदयन के पास आते हैं वत्सराज उदयन धायमाता वसुन्धरा से महाराज प्रद्योत की कुशलक्षेम पूछते हैं। तभी धायमाता वसुन्धरा महाराज प्रद्योत द्वारा भेजे गए वासवदत्ता और उदयन के विवाह का चित्र राजा को देती है। पद्मावती वासवदत्ता का चित्र देखकर राजा से कहती है – **''ऐसी ही सूरत या आकृति की स्त्री मेरे पास है''** अर्थात् ऐसी ही सूरत या आकृति की युवती या स्त्री को एक सज्जन ने धरोधर के रूप में अपनी बहन बताकर मेरे पास रखा है जिसका

नाम अवन्तिका है। यह सुनकर राजा उदयन पद्मावती से अवन्तिका को बुलाने का अनुरोध करते हैं।

यौगन्धरायण भी उसी समय ब्राह्मण को छद्मवेश धारण कर बहन को लेने के लिए आ जाते हैं। अवन्तिका वेश में वासवदत्ता वहाँ लायी जाती है। राजा की आज्ञा से उसका घूँघट हटाया जाता है ,तो उसकी धायमाता वसुन्धरा उसे पहचान जाती है। अवसर देखकर यौगन्धरायण भी अपना कल्पित वेश हटाकर राजा का जयघोष करता है। वासवदत्ता भी उसके स्वर में स्वर मिलाती हुयी जयघोष करती है। महाराज उदयन की जय हो ! इसके पश्चात् रानी वासवदत्ता और यौगन्धरायण राजा से अपने अपराध की क्षमा–याचना करते हैं। फिर यौगन्धरायण रहस्योद्घाटन करते हुए राजा को स्वामी कल्याण के लिए बनाई गयी योजना का सम्पूर्ण वृतान्त बताता है। मंगलमय परिणाम से सब प्रसन्न होते हैं। राजा उदयन सपरिवार उज्जयिनी में राजा प्रद्योत के पास जाने के लिए उद्यत होते हैं। इस प्रकार भरत वाक्य के साथ नाट्य की समाप्ति होती है।[1]

➢ नाटक का नामकरण :–

''स्वप्नवासवदत्तम् ''नाटक राजा उदयन के द्वारा स्वप्न में वासवदत्ता के दर्शन पर आधारित है। इस नाटक के नामकरण में स्वप्न का दृश्य अत्यन्त ही भावपूर्ण और नाटकीय महत्व का है। संस्कृत नाट्यशास्त्र में स्वप्नवाला दृश्य अपना विशेष महत्व रखता है। जो सरलता व कल्पना का प्रासाद स्वप्न दृश्य में है।[2] स्वप्न का दृश्य पाँचवे अंक में घटित होता है। राजा स्वप्न में अपनी प्रियतमा से बातें करता है। वासवदत्ता उनका उत्तर देती है। इस घटना के पश्चात् राजा को वासवदत्ता के जीवित रहने और कालान्तर में प्राप्त हो जाने की दृढ़ आशा बंध जाती है। स्वप्नोद्भूत यह आशा ही पति–पत्नी के निश्चित साहचर्य का मार्ग प्रशस्त करती है। जो नाटक के अन्त में घटित होता है।[3] कवि ने इसी स्वप्नदृश्य से प्रभावित होकर इसी के नाम पर नाटक का नाम स्वन्वासवदत्तम् रखा है। जो अन्यन्त उपयुक्त है।

स्वप्न का दृश्य इस नाटक की आत्मा है और उस आधार पर यह नामकरण अर्थात् नाटक का नाम **''स्वप्नवासवदत्तम्''** सर्वथा यथार्थ है।

➢ नाटक का कथास्रोत :–

स्वप्नवासवदत्तम् नाटक की कथा का मूल स्त्रोत उदयनकथा मूलक है। उदयन की लोककथाएं भी इस नाटक का आधार है। कुछ विद्वान् ''स्वप्नवासवदत्तम्'' नाटक की कथा का मूलस्त्रोत ''वृहत्कथामूलक'' मानते हैं।

''स्वप्नवासवदत्तम्'' नाटक में भी प्रचलित उदयन कथा में नाटककार महाकवि भास ने पर्याप्त परिवर्तन किया है। प्रसिद्ध उदयन कथा में यौगन्धरायण ने वासवदत्ता के अग्नि में जलने की झूठी अफवाह फैलाकर राजकुमारी पद्मावती के साथ राजा उदयन का परिणय कराके राजा उदयन को चक्रवर्ती सम्राट बनाने का काम किया। किन्तु नाटककार ने चक्रवर्ती सम्राट् बनाने के उद्देश्य से नहीं अपितु आरूणि द्वारा वत्सदेश का अधिकांश भाग पर अधिकार करने तथा देवों द्वारा राजा उदयन एवं पद्मावती के विवाह से राज्य विस्तार की भविष्यवाणी करना। वासवदत्ता एवं यौगन्धरायण का लावाणक अग्नि में जलने की झूठी अफवाह फैलाना कथानक बनाया है।[4]

इसी प्रकार उदयन की लोककथा में स्वप्न वाला दृश्य भी नहीं है। लेकिन कविवर भास ने अपनी अद्भुत कल्पनाशक्ति एवं उद्भावना से कथा में राजा के स्वप्न वाला दृश्य घटित कर मूल लोककथा में परिवर्तन किया है। इसके अतिरिक्त भी अन्य परिवर्तन महाकवि भास ने किए हैं।

(ख) प्रतिज्ञायौगन्धरायण की कथावस्तु

महाकवि भास के रूपकों में प्रतिज्ञायौगन्धरायण एक उत्कृष्ट रूपक है। यह रूपक चार अंकों में विभक्त है। इस रूपक में वत्सदेशीय नरेश राजा उदयन को प्रद्योत के द्वारा बन्दी बनाया जाना तथा यौगन्धरायण की प्रतिज्ञा तथा कुशल नीति–व्यवहारों के द्वारा वत्सनरेश उदयन के मुक्त होने एवं साथ में प्रद्योत पुत्री

वासवदत्ता के अपहरण की घटना का वर्णन है चार अंकों में विभाजित इस रूपक की कथावस्तु इस प्रकार है।

प्रथम अंक में नान्दी पाठ के बाद सूत्रधार तथा नटी रंगमंच पर उपस्थित होते हैं। नटी सूत्रधार से कहती है कि रात में मैंने बुरे स्वप्न देखे हैं। इसलिए कुशल क्षेम जानने के लिए सूत्रधार एक मंत्री को नटी के पितृगृह भेज देता है। इसके बाद वत्सराज उदयन का मन्त्री यौगन्धरायण सालक के साथ रंगमंच पर उपस्थित होता है। वह सालक से वार्त्तालाप में कहता है वत्सराज उदयन वेणुवन के समीप गहन वन के बीच नागवन को कल प्रातः काल में चले जायेगें। यौगन्धरायण वत्सराज उदयन के नागवन में जाने से पूर्व ही सालक को पत्र एवं रक्षा सूत्र के साथ वत्सराज उदयन के पास भेजना चाहता है तभी विजया आती है। यौगन्धरायण विजया से कहता है कि लेख पत्र और रक्षासूत्र जल्दी से लाओं। यौगन्धरायण सालक से नागवन मार्ग के सम्बन्ध में बात करता है। यौगन्धरायण अपनी बुद्धिमानी से प्रद्योत की योजना का अनुमान लगाते हुए सालक से कहता है कि वत्सराज उदयन को प्रद्योत कपटपूर्वक छलना चाहता है तथा सालक आश्चर्य व्यक्त करता है। प्रद्योत की इतनी बड़ी सेना होने पर भी वत्सराज से भयभीत है।

उसी समय निर्मुण्डक आकर यह सूचना देता है कि उदयन के साथ रहने वाला अंग रक्षक हंसक आया है। हंसक के अकेले वापस आने से यौगन्धरायण घबराता है और शंकित होकर सोचता है कि मुझे प्रिय या अप्रिया क्या सुनना पड़ेगा। हंसक यौगन्धरायण को आकर बताता है कल सुबह ही स्वामी उदयन नागवन को चले गये तथा वहाँ बन्दी बना लिए गए।

यौगन्धरायण हंसक से पूछता है कि स्वामी किस प्रकार पकड़े गये। बुद्धिमान् रूमण्वान् और घुड़सवार सैनिक कहाँ थे। हमारी सम्पूर्ण सेना पराजित हो गयी या दुर्गम कानन में तितर–बितर हो गयी। हंसक कहता है कि यदि सम्पूर्ण सेना के साथ स्वामी रहते, तो यह घटना नहीं होती। महाराज उदयन थोड़ी रात शेष रहने पर थोड़ी सी सेना के साथ नागवन को गये। जितनी दूर बाण फेंकने पर जा सकता है उतने ऊँचे सूर्य के चढ़ जाने पर मदगन्धीर पर्वत एक कोस रह गया तो

हाथियों का भयंकर समूह दिखाई दिया। वह ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सरोवर के पंक से निकला हुआ तथा उस पर मैनसिल का आधा काम किया हो। स्वामी नीले रंग श्रेष्ठ हाथी को अपनी वीणा की सहायता से पकड़ने जाते हैं। रूमण्वान् ने स्वामी को रोकते हुए कहा कि आपको ऐरावत ऐसे दिग्गजों को पकड़ना असम्भव नहीं, परन्तु दूसरे देश में रक्षा कठिनाई से होती है। स्वामी ने रूमण्वान् को शपथ देकर तथा नील बलाहक नामक हाथी से उतरकर सुन्दर पाटल नामक अश्व पर चढ़ कर अपने साथ थोड़े पैदल सैनिक लेकर वे चले गये। वहाँ पहुँचने पर स्वामी ने देखा कि उस हाथी के पेट से अस्त्रधारी योद्धा निकले। उन्हें देखते ही वे समझ गये यह प्रद्योत का कपटपूर्ण षड्यन्त्र है। फिर स्वामी ने पराक्रमपूर्वक सम्पूर्ण दिन युद्ध किया, शुत्रुओं का संहार किया। परन्तु सायंकल में अश्व के धराशायी होकर मर जाने पर महाराज उदयन भी मूर्च्छित होकर गिर पड़े। शत्रु सैनिकों ने उन्हें बाँध लिया और पीड़ित करने लगे। तभी उनमें से एक सैनिक तलवार लेकर स्वामी को मारने के लिए दौड़ा लेकिन पृथ्वी के रक्त से सिक्त होने के कारण उसका पैर फिसलकर गिर गया। उसी समय प्रद्योत का मंत्री शालंकायन वहाँ आया और उदयन को बन्धन से मुक्त कराया। फिर उदयन को पालकी में बैठाकर उज्जयिनी ले गया । हंसक की बातों को सुनकर यौगन्धरायण कहता है कि बन्दी बनाए हुए पुरूष का सत्कार हो या निरादर हो, वह हमेशा लज्जित ही रहता है। यौगन्धरायण ने प्रतिहारी से कहा इस घटना को राजमाता के पास जाकर बताओं। शालंकायन द्वारा मुझे हंसक छोड़ने पर स्वामी का कण्ठ अवरूद्ध हो गया और स्वामी ने कहा कि ''जाओ यौगन्ध..... यौगन्धरायण से मिलो।

इसी समय प्रतिहारी आकर राजमाता का संदेश यौगन्धरायण को सुनाती हुई कहती है उन्होंने कहा कि यौगन्धरायण सर्वप्रथम तुम मेरे पुत्र के मित्र हो तदुपरान्त मन्त्री हो। मेरी यही इच्छा है कि मेरे पुत्र को जीवित ला दो। यौगन्धरायण प्रतिज्ञा करता है कि राहु से ग्रसित चन्द्रमा के समान पकड़े गये स्वामी को यदि मैं मुक्त न करा दूँ, तो मेरा नाम यौगन्धरायण नहीं।

यदि शत्रुबलग्रस्तो राहुणा चन्द्रमा इव।

मोचयामि न राजानं नास्मि यौगन्धरायणः।।[5]

भगवान द्वैपायन व्यास के द्वारा आर्शीवाद स्वरूप दिये वस्त्र धारण कर यौगन्धरायण का स्वरूप या वेश बदल जाता है। यौगन्धरायण राजमाता से यह कहकर चला जाता है। आप शान्तिगृह में मेरी प्रतीक्षा कीजिएगा।

द्वितीय अंक में प्रद्योत की राजधानी का वर्णन है। प्रद्योत की कन्या वासवदत्ता के विवाह हेतु अनेक राजाओं के प्रस्ताव आ रहे हैं।

सर्वप्रथम कंचुकी रंगमंच पर आता है। काशी नरेश के वहाँ से आए हुए जैवन्ति दूत का अतिथि सत्कार करता है। प्रतिदिन भिन्न–भिन्न राजकुलों से वासवदत्ता के विवाह हेतु दूत आ जा रहे हैं परन्तु महासेन न तो किसी से स्वीकार करते हैं न अस्वीकार। इस कन्या का विवाह दैवाधीन है। कंचुकी राजा महासेन से कहता है कि जैवन्ति का यथोचित आदर सत्कार कर दिया है। महासेन कंचुकी से वासवदत्ता के विवाह के सम्बन्ध में कहता है कि मैं चाहता हूँ कि वर अच्छे कुल में उत्पन्न, दयावान्, मृदु तथा बलवान एवं सुन्दर, पराक्रमी हो। क्योंकि नारियों की रक्षा पराक्रमी या पराक्रमशाली योद्धा ही कर सकता है। कन्या के लिए सर्वगुण सम्पन्न वर पिता के प्रयत्न से उपलब्ध होता है शेष बातें दैवाधीन है।

वासवदत्ता के विवाह के सम्बन्ध में बात करने के लिए महासेन महारानी को बुलवाते हैं। महारानी से महासेन पूछते हैं, वासवदत्ता कहाँ है ? महारानी बताती है कि वासवदत्ता उतरा नाम वाली वैतालिका के पास नारदीय वीणा सीखने गई है।'' वासवदत्ता की वीणा के प्रति रूचि अपनी सखी कांचनमाला के वीणा अभ्यास करने को देखकर सीखने की अभिलाषा जागृत हुई। महारानी महासेन से एक वीणा शिक्षक की मांग करती है। महासेन राजनी से कहते हैं कि मगध, काशी, मिथिला, सूरसेन देश के अधिपति वासवदत्ता से विवाह के इच्छुक हैं। परन्तु किस–से विवाह किया जाए ? यह बताओ ? इसी समय सहसा कंचुकी आकर कहता है कि वत्सराज से। यह सुनकर राजा सतर्क होते हैं। कंचुकी बीच में बोलने के लिए क्षमा मांगता है और कहता है कि ''आपके मंत्री शालंकायन ने वत्सराज को बन्दी बना लिए है। प्रद्योत प्रिय सन्देश सुनकर विश्वास नहीं करते और कहते हैं कि मैं इस बात को उसी प्रकार से नहीं स्वीकार कर सकता जिस प्रकार मन्दराचल पर्वत हाथ

से घुमाया गया यह असत्य है। वत्सराज उदयन के मंत्री यौगन्धरायण की कूटनीतिक मन्त्रणाएं आज भी हमारे कानों में गूंज रही हैं। परन्तु कंचुकी महासेन को विश्वास दिलाता है कि आज तक वृद्ध ब्राह्मण ने कभी–भी आपके सम्मुख झूठ नहीं बोला। तब महासेन को विश्वास होता है।

राजा महासेन वत्सराज उदयन का यथोचित सत्कार करने के लिए कहते हैं। वत्सराज को राजमहल के अन्दर लाने तथा राजकुमार के दर्शन से किसी को वंचित न किया जाए ऐसा निर्देश देते हैं। क्योंकि अपने पराक्रम के कारण प्रसिद्ध मेरे शत्रु को लोग उस तरह देखें जैसे यज्ञ के लिए बधे हुए सिंह को देखते हैं। जिसका क्रोध भीतर ही छिपा रहता है। प्रद्योत महासेन तथा रानी दोनों वत्सराज के बन्दी बनाकर लाये जाने की खबर से अत्यधिक प्रसन्न होते हैं और कहते है, कि पहले कभी ऐसा शुभ संदेश या शुभ संवाद नहीं सुना। रानी महासेन से कहती है अनेक राजाओं अपने वैवाहिक सम्बन्ध हेतु अपने दूत भेजे परन्तु वत्सराज उदयन ने नहीं भेजे। महासेन ने कहा उदयन मेरा गौरव नहीं मानता इसलिए सम्बन्ध की बात नहीं की। तृण समूह में फेंकी हुई आग के समान सम्पूर्ण पृथ्वी को जलाता हुआ मेरा शासन वत्सराज उदयन के देश में नहीं चलता। महारानी महासेन से परोक्ष रूप में उदयन को वासवदत्ता के लिए उपयुक्त वर मानती है। इसी समय कंचुकी आता है और शालंकायन द्वारा भेजी हुई वत्सराज की प्रिय घोषवती नामक श्रेष्ठ वीणा प्रद्योत महासेन को देता है।

प्रद्योत वीणा किसे दी जाएँ इस विषय में विचार करता है क्योंकि उसका ज्येष्ठ पुत्र गोपालक अर्थशास्त्र का ज्ञाता है और दूसरा पुत्र जो छोटा है वह व्यायाम का प्रेमी है। गान विद्या अर्थात् गीत संगीत में उसकी रूचि नहीं है। अतः वह वीणा वासवदत्ता को देता है। जिसे पाकर वासवदत्त उन्मत्त हो जाती है। महासेन कंचुकी से वत्सराज के घावों का ठीक ढंग से उपचार तथा उचित अतिथि–सत्कार करने को कहता है। वत्सराज की इच्छा के अनुकूल ही कार्य करने, बीते हुए युद्ध की चर्चा नहीं करने, जम्हाई अथवा छींक आने पर आशीर्वादात्मक वचन का प्रयोग करने, समयानुसार पूजा सामग्री का प्रबन्ध करने तथा धूप से बचने के लिए मयूरयष्टि नामक महल से हटाकर मणिमय भाग में ठहराने के लिए कंचुकी से

कहता है। महारानी प्रद्योत से वासवदत्ता के अभी छोटी होने तथा विवाह में शीघ्रता करने के लिए मना करती है। इसके बाद महारानी चली जाती है, राजा प्रद्योत सोचता है कि पहले उदयन के अभिमान के कारण मेरी शत्रुता थी लेकिन उदयन के यहाँ आने पर मैं तटस्थ हो गया। परन्तु उदयन के युद्ध में व्यग्र और आपद् ग्रस्त तथा संशय में पड़े होने से इसे सुनकर मैं चिन्तित हो गया हूँ।

तृतीय अंक के प्रारम्भ में वत्सराज उदयन को विदूषक वसन्तक वेष बदलकर महासेन प्रद्योत की राजधानी में दिखाई देता है। जो अपने लड्डुओं को खोजता है। यौगन्धरायण ने उन्मत्तक का वेष धारण किया और मंत्री रूमण्वान् ने श्रमणक का वेश धारण किया तथा दोनों प्रद्योत की राजधानी में प्रवेश करते हैं। विदूषक के लड्डुओं को उन्मत्तक ने लिया है। विदूषक और उन्मत्तक दोनों आपस में सांकेतिक भाषा में वार्त्ता इस प्रकार करते हैं। विदूषक लड्डू (मोदक) उन्मत्तक से मांगता है। उन्मत्तक यह लड्डू या मोदक विशेष सामग्री से बने हुए, राजगृह से खरीदे तथा समय से सुखे हुए मुझे मिले हैं। विदूषक मेरा मोदक लौटा दो। उसी पाथेय के सहारे मैं आचार्य के घर जाऊँगा। उन्मत्तक मैं इसे खाकर सौ योजन जाऊँगा।

उसी समय रूमण्वान् (श्रमणक) के वेश में वहाँ आता है। तीनों आपस में मध्याह्न काल के समय मन्त्रणा हेतु निर्जन अग्निग्रह में जाते हैं। यौगन्धरायण विदूषक से पूछता है कि स्वामी अर्थात् महाराज उदयन से तुम्हारी भेंट हुई। वह कहता है – हाँ भेंट हुई और बहुत देर तक उन्होंने रोका था। क्योंकि महाराज चर्तुदशी पूजन के लिए स्नान कर रहे थे। यौगन्धरायण सोचता है। जिन स्वामी को पूजा करने के बाद मंगल वचन और नगाड़े की आवाज सुनाई पड़ती थी। आज उन्हें बेड़ियों की झंकार सुननी पड़ रही है।

उन्मन्तक (यौगन्धरायण) वसन्तक (विदूषक) से कहता है कि स्वामी से जाकर पुनः मिलो और उनसे कहो कि आपकी यहाँ से मुक्ति का सारा उपाय तथा यहाँ से भागकर एक ही दिन में अपने राज्य पहुँचने का प्रबन्ध या योजना बना ली है। परन्तु वसन्तक बताता है यह कार्य पूर्ण नहीं हो सकता क्योंकि कालाष्टमी के दिन वासवदत्ता शिविका पर सवार होकर कारागार के द्वार के आगे भगवती ''यक्षिणी'' के

स्थान पर देवता पूजन के लिए गई। राजा उदयन कारगार के रक्षक शिवक नामक कर्मचारी को प्रसन्न कर कारागार के द्वार पर आये और रूपवती वासवदत्ता को देखकर अपने बन्धन को प्रमदवन समझकर वे कामातुर हो गये। वत्सराज उदयन कहने लगे कि मैं कौशाम्बी अकेले ना जाकर वासवदत्ता को साथ लेकर जाऊँगा।

यौगन्धरायण (उन्मत्तक) हँसते हुए कि स्वामी को अकाल और परदेश में कामवासना सता रही है। विदूषक उदयन को छुड़ाने का प्रयास व्यर्थ है। यौगन्धरायण ऐसा मत कहो दुःख एवं काम से पीड़ित मित्र की बात को मानकर समयानुसार उसे छोड़ना नहीं चाहिए। विदूषक यौगन्धरायण से आप चाहे तो कारागार से राजा उदयन और अन्तःपुर से वासवदत्ता दोनों का हरण कर लें।

यौगन्धरायण दूसरी प्रतिज्ञा करता है कि –''जिस प्रकार हाथी कमल वल्लरी को सहज तोड़ देता है और सुभद्रा को अर्जुन लेकर भागे थे उसी प्रकार यदि राजा तथा वासवदत्ता का हरण न कर लें तौ मैं यौगन्धरायण नहीं और यदि उस घोषवती वीणा को नलागिरी हाथी विशाल नेत्रों वाली वासवदत्ता तथा वत्सराज को हर कर कौशाम्बी न ले जाऊँ तो मेरा नाम यौगन्धरायण नहीं। उसी समय दोपहर समाप्त होने के कारण जन कोलाहल मार्गों पर बढ़ने लगता है। रूमण्वान् अग्निगृह से पृथक्–पृथक् मार्गों में चलने को कहता है। यौगन्धरायण शत्रु का भेदन करने हेतु हमें अपने कार्य में तत्पर रहना चाहिए। वे सब इधर–उधर चले जाते हैं।

चतुर्थ अंक में गात्रसेवक को खोजते हुए भट आता है। गात्रसेवक भद्रवती नामक हाथी का सेवक है और यह वत्सराज का गुप्तरूपधारी चर भी है। गात्रसेवक मदिरा पीकर मस्त हुए का अभिनय करता है। और बढ़–बढ़ाता है कि मदिरा से जो मस्त हो जाते हैं वे धन्य हैं। जो सुरा में स्नान करते हैं। और जो सुरा पीकर मर जाते हैं। वे भी धन्य हैं। तथा जो पारिवारिक कार्यों में कष्ट को सहते हैं और सुरापान नहीं करते वे मूर्ख हैं। परिवार के भरण–पोषण के अतिरिक्त यमलोक में और कोई दुःख हैं इसमें मुझे सन्देह है। भट गात्रसेवक से पूछता है कि भद्रवती हाथी नहीं दिखाई दे रही है और तुम नशे में होकर घूम रहे हो। गात्रसेवक भट को बताता है मैंने भद्रवती के अंकुश, अर्धचन्द्रमाला, घण्टा, कशा तथा भद्रवती को भी

बन्धक रख दिया है। उसी समय कोलाहल होता है। गात्रसेवक भट से मैं जानता हूँ कि भद्रावती मदिरा बेचने वाली के घर को तोड़ कर भाग रही है। इसी समय कोलाहल की आवाज से स्पष्ट होता है कि वत्सराज उदयन राजकुमारी वासवदत्ता को लेकर भाग गये। गात्रसेवक अपना असली रूप प्रकट करता है कि हम लोग यौगन्धरायण के द्वारा अपने–अपने स्थान पर नियुक्त गुप्तचर हैं। इसके बाद युद्ध छिड़ता है। यौगन्धरायण ने एक मुहूर्त तक सेना के बेग का सामना किया परन्तु सुन्दर नामक हाथी के दाँत में मारने से उसकी तलवार टूट गई और वह बन्दी बना लिया गया।

यौगन्धरायण को युद्ध में बन्दी बनाये जाने का कोई शोक या लज्जा नहीं है बल्कि वह अपने को और अधिक गौरवान्वित महसूस कर रहा है। क्योंकि उसके द्वारा ली गई दोनों प्रतिज्ञाएं पूरी हो गईं हैं तथा उसने अपने कार्य में सफलता पाई है। यौगन्धरायण राजधानी में उसे देखने वाले लोगों से कहता है। पहले ये लोग मेरे कृत्रिम वेष तथा निन्द्रित रूप को देख चुके हैं परन्तु अब ये लोग मेरे सुन्दर कर्मों को देखेगें। भट यौगन्धरायण से मंत्री के आदेशानुसार आपको शस्त्रागार में ठहराया जाएगा। क्योंकि वह स्थान गोपनीय है। यह सुनकर यौगन्धरायण कितनी हास्यास्पद बात है कि जब वत्सराज को कैद कर सब प्रकार से रक्षा करनी चाहिए थी उस समय अमात्य वर्ग सो रहा था और अब रत्न के चले जाने पर चौकसी बरत रहा है। यौगन्धरायण से शस्त्रागार में मिलने प्रद्योत का अमात्य भरतरोहक आता है। भरत रोहक यौगन्धरायण से कहता है कि धोखा देकर वत्सराज को भगाकर तुम अपने को वीर समझते हो तब यौगन्धरायण ने कहा पहले तुम लोगों ने कृत्रिम हाथी के छल से स्वामी को बन्दी बनाया।

भरतरोहक वत्सराज उदयन ने वासवदत्ता को अपनी शिष्या बनाया और उसका हरण कर लिया यौगन्धरायण भरत कुलोत्पन्न बलवान् वत्सराज किसी कन्या को बिना स्त्री बनाये क्या शिक्षा दे सकता है ? भरत रोहक युद्ध में बन्दी वत्सराज का हम लोगों ने वध नहीं किया। तो इसी प्रकार हमने महासेन का वध नहीं किया, भरतरोहक के सारे प्रश्नों के उत्तर यौगन्धरायण देता है। कंचुकी यौगन्धरायण के गुणों की प्रशंसा करते हुए उसे स्वर्ण रचित पात्र को पुररूस्कार स्वरूप देता है।

यौगन्धरायण अस्वीकार करते हुए अपराधी का पुररूस्कार तो केवल उसका वध है। सहसा महल में बाजों की ध्वनि सुनकर भरतरोहक कंचुकी को बाजों की ध्वनि का कारण जानने के लिए भेजता है। कंचुकी लौटकर बताता है कि वासवदत्ता की शोकाग्नि में महारानी अंगारवती महल से कूदकर प्राण त्यागना चाहती थीं। परन्तु महासेन ने कहा कि तुहारी पुत्री वासवदत्ता का विवाह क्षात्र धर्म के अनुसार हुआ है। इसलिए चित्रफलक के द्वारा उन दोनों का विवाह कर दो। यौगन्धरायण यह सुनकर उपहार ग्रहण कर लेता है। भरतरोहक यौगन्धरायण से पूछता है कि महासेन तुम्हारा क्या प्रिय करें तो यौगन्धरायण कहता है कि महासेन मेरे ऊपर प्रसन्न हैं तो इससे अधिक मुझे क्या चाहिए। इस प्रकार भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।[6]

➢ नाटक का नामकरण :–

महाकवि भास ने ''प्रतिज्ञायौगन्धरायण'' नाटक का नामकरण वत्सराज उदयन के महामन्त्री 'यौगन्धरायण' की प्रतिज्ञाओं के आधार पर किया है यौगन्घरायण कूटनीतिक मंत्री है। यौगन्धरायण को यह पता चलता है कि कपटपूर्वक नकली हाथी के छल से अवन्तिराज महासेन ने उदयन को बन्दी बना लिया है तो वह प्रतिज्ञा करता है कि राहु से ग्रसित चन्द्रमा के समान शुत्रओं से पकड़े गये स्वामी को यदि मुक्त न करा दूँ तो मैं यौगन्धरायण नहीं या मेरा नाम यौगन्धरायण नहीं। इस प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए वह महासेन के यहाँ से उदयन को भगाने की पूरी योजना बना लेता है। परन्तु विदूषक तथा रूमण्वान् के द्वारा यौगन्धरायण को जब यह मालूम होता है कि उदयन महासेन की पुत्री वासवदत्ता पर मोहित है तथा उसे भी साथ लेकर भागना चाहते हैं। तो यौगन्धरायण दूसरी बार पुनः प्रतिज्ञा करता है कि – ''जिस प्रकार हाथी कमल वल्ली को सहज तोड़ डालता है और सुभद्रा को अर्जुन लेकर भागे थे उसी प्रकार यदि वासवदत्ता का हरण न करा दूँ तो मैं यौगन्धरायण नहीं और यदि उस घोषवती वीणा को नीलगिरी हाथी विशाल नेत्रों वाली वासवदत्ता तथा वत्सराज को हर कर कौशाम्बी न ले जाऊँ तो मैं यौगन्धरायण नहीं।[7]

यौगन्धरायण की दोनों प्रतिज्ञाओं का पूर्ण हो जाना तथा सभी कार्यों का सम्पन्न होने से नाटक के नाम की सार्थकता प्रतीत होती है। अतः नाटक का नाम ''प्रतिज्ञायौगन्धरायण'' उपयुक्त तथा कथानुकूल है।[8] महाकवि भास ने यौगन्धरायण की इन्हीं प्रतिज्ञाओं के आधार पर नाटक का नामकरण प्रतिज्ञा यौगन्धरायण या नाटक का नाम प्रतिज्ञायौगन्धरायण रखा। जो अत्यधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

➢ नाटक का कथास्रोत :–

उदयन तथा वासवदत्ता की प्रेम कहानी उज्जयिनी के लोगों में अत्यधिक लोकप्रिय थी। उज्जयिनी के लोगों द्वारा उदयन तथा वासवदत्ता की प्रेम कहानी सुनी और कही जाती थी। इसका वर्णन कालिदास ने मेघदूत में इस प्रकार किया है– **प्राप्यावन्तीनुदयनकथाको –विदग्रामवृद्धान्''।** सम्भवतः भास ने इसी लोककथा को आधार बनाकर उसमें यथेच्छ परिवर्तन और परिमार्जन करके नाटकीय कथा का सृजन किया हो। वत्सराज उदयन की कथा का वर्णन गुणाढय की बृहत्कथा मन्जरी और सोमदेव के कथासरित्सागर में भी मिलता है। सम्भवतः बृहत्कथामन्जरी और कथासरित्सागर की कथा या कहानी उज्जयिनी में लोककथा के रूप में प्रचलित तथा लोकप्रिय हो गई होगी। महाकवि भास ने उसी कथा को अधार बनाकर तथा कथा में आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर **प्रतिज्ञायौगन्धरायण** की रचना की है।[9]

उदयन की कथा उस समय इतनी प्रचलित रही होगी कि विभिन्न नाटककारों ने उसका वर्णन अपने–अपने ढंग से किया है। उन्मत्त वासवदत्ता, वीणा वासवदत्ता और रत्नावली भी इसी प्रकार नाट्य कृतियां हैं।

(ग) रत्नावली की कथावस्तु

प्रथम अंक में वत्सराज उदयन अपने समस्त शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त राज्य का समस्त राजकार्य मंत्रियों को सौंप देते हैं। वत्सराज उदयन मदन महोत्सव मनाने की तैयारियाँ शुरू करने के लिए विदूषक से कहते हैं। मदन

महोत्सव देखने के लिए एवं प्रतिभाग करने के लिए नगरवासी अत्यन्त उत्सुक हैं। वसन्त ऋतु में मनाये जाने वाला उत्सव मदन महोत्सव कहलाता है। इस उत्सव में कामदेव अपने धनुष से काम रूपी बाण चलाते हैं। राजा उदयन महारानी वासवदत्ता से मदन महोत्सव में भाग लेने के लिए कहते हैं। रानी वासवदत्ता लज्जावश हाँ कर देती है।

महारानी वासवदत्ता मकरन्दोद्यान में जाकर रक्त अशोक वृक्ष के नीचे स्थित कुसुमधनुषधारी भगवान् कामदेव की पूजा सम्पादित करने के लिए महाराज उदयन को साथ ले जाती है। वासवदत्ता रक्ताशोक के वृक्ष के नीचे कामदेव की पूजा सम्पादित करती है। फिर राजा उदयन की पूजा करती है। तब राजा को मकरन्दोद्यान में देखकर सागरिका (रत्नावली) सोचती है, इन्हीं राजा उदयन की रानी बनने के लिए पिता ने मुझे यहाँ भेजा था। सागरिका राजा उदयन को छिपछिपकर देखने लगती है। इस प्रकार मदन महोत्सव नाम का प्रथम अंक समाप्त हो जाता है।

द्वितीय अंक में सागरिका (रत्नावली) उदयन से मिलन दुर्लभ समझकर राजा उदयन का चित्र बनाती है। सागरिका सुसंगता से यह चित्र कामदेव का हैं सुसंगता सागरिका से मैंने कामदेव के साथ रति का भी चित्र बना दिया। सुसंगता चित्रफलक को तमाल वुक्ष के झुरमुट में रख देती है। जिसे वहाँ से वानर उठाकर ले जाता है, और मार्ग में फैंक देता है। तभी वसंतक उस चित्रफलक को देख लेता है।

राजा उदयन और विदूषक नवमालिकालता में छिपकर सागरिका और सुसंगता की वार्ता सुनते है। सागरिका उदयन से प्रेम करने के कारण अत्यधिक सन्ताप में हैं। सुसंगता सागरिका से तुम्हें महाराज उदयन के समान ही वर प्राप्त होगा। दोनों सखियों की बातें सुनकर राजा और विदूषक खुश होते हैं। दोनों सखियों किसी के आने की आवाज सुनकार वहाँ से कदली वन में चली जाती हैं। राजा कदली वन में जाकर चित्रफलक को देखकर सागरिका का चन्द्रमा तथा कमल के समान कोमल होने पर उसकी सुन्दरता की प्रशंसा करता है। सुसंगता को

आता देखकर राजा चित्रफलक को छिपा देते हैं। सुसंगता राजा से चित्रफलक सम्बन्धित सम्पूर्ण वृत्तान्त रानी वासवदत्ता को बताने की धमकी देती है। सुसंगता पारितोषिक के रूप में राजा से सागरिका का हाथ पकड़ने का निवेदन करती है। राजा सुसंगता के साथ कदली वन से बाहर आकर सागरिका को देखकर उस पर मोहित हो जाता है। सागरिका भी राजा को देखकर हर्ष और भय से मन ही मन में आनन्दित होती है। उदयन सागरिका से प्रेम की बातें करता है। लेकिन सागरिका क्रोध का आडम्बर करके भौंह तिरछी करती है। विदूषक सागरिका के इस आडम्बर को वासवदत्ता के समान बताता है। वासवदत्ता का नाम सुनकर राजा चकित होकर उठ जाता है।

सागरिका और सुसंगता कदलीगृह के गली वाले मार्ग से वहां से चले जाते हैं। राजा विदूषक को डाँटता है कि सागरिका से मिलन की शुभ बेला पर तुमने व्यवधान उत्पन्न कर दिया। तभी कांचनमाला और महारानी वासवदत्ता कदलीगृह में आते है। विदूषक चित्रफलक अपनी बगल में छिपा लेता है। वासवदत्ता और राजा नवमालिका लता के पुष्पित होने पर उसकी सुन्दरता एवं प्राकृतिक सौन्दर्य की प्रसंशा करते हैं। विदूषक के वार्त्ता सुनकर प्रसन्न होने से चित्रफलक नीचे गिर जाता है। कांचनमाला और वासवदत्ता चित्रफलक को देखते है। विदूषक मैंने महाराज की आकृति बनायी है। राजा मन की कल्पना अनुसार कन्या का चित्र बनाया है। चित्रफलक को देखने से महारानी के शिर में पीडा होने के कारण वह कदली गृह से कांचनमाला के साथ चली जाती है। विदूषक वासवदत्ता के चले जाने पर खुश होता है। राजा वासवदत्ता क्रोधित होकर चली गयी है। राजा उदयन भी कदलीगृह से बाहर आ जाते हैं। कदलीगृह नामक दूसरा अंक समाप्त हो जाता है।

तृतीय अंक के प्रारम्भ में कांचनमाला राजकुल से लौटते समय चित्रशाला के द्वार पर सुसंगता और बसन्तक का सम्भाषण सुनती है। जिन्होंने राजा और सागरिका को मिलाने की योजना बनायी है। इस योजना को महाराजनी वासवदत्ता को बताने के लिए कांचनमाला और मद्निका जाते हैं । योजनानुसार सुसंगता महारानी वासवदत्ता के वेष में सागरिका को लेकर तथा स्वयं। सुसंगता कांचनमाला

का वेष धारण कर संध्या समय माधवी लता मण्डप में महाराज से मिलाने ले जाती है।

राजा सागरिका के प्रेम में कामजनित अग्नि में जल रहे हैं। राजा उदयन माधवीलता मण्डप में नीचे अपनी प्रेमिका सागरिका से मिलने की प्रतीक्षा करते हैं। विदूषक वासवदत्ता के वेष मे सागरिका को लेने चला जाता है। वासवदत्ता और कांचनमाला चित्रशाला के द्वार पर पहुचते हैं। वासवदत्ता को सागरिका से मिलन की योजना का विश्वास चित्रशाला द्वार पर बैठै विदूषक को देखकर हो जाता है। लेकिन विदूषक वासवदत्ता के वेष में सागरिका और कांचनमाला के वेष में सुसंगता का समझकर माधवी लता मण्डप में ले जाता है। राजा उदयन सागरिका के रूप एवं आलौकिक सौन्दर्य की प्रशंसा करने लगते हैं। विदूषक सागरिका से मधुर वचन बोलने के लिए कहता है। क्योंकि देवी वासवदत्ता के दुर्वचनों से महाराज आहत हैं। वासवदत्ता क्रोधित होकर अपना घुँघट हटाती है राजा वासवदत्ता को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं।

राजा वासवदत्ता को प्रसन्न करने का प्रयास करता है। लेकिन वासवदत्ता अप्रसन्न एवं दुःखी होकर वहाँ से चली जाती है। तभी सागरिका वास्तविक वासवदत्ता के वेष में लता मण्डप में आती है। राजा सागरिका को वास्तविक वासवदत्ता समझते हैं। सागरिका स्वयं को अनाथ समझकर दुःखी होकर माधवी (चमेली) लतापाश अपने कण्ठ में डालती है। राजा जल्दी से जाकर उसके गले से पाश को पृथक करता है। राजा को देखकर सागरिका अत्यधिक प्रसन्न होती है। राजा सागरिका को पहिचान लेता है। राजा उदयन और सागरिका परस्पर आलिंगन करके स्पर्श सुख का आनन्द प्राप्त करते हैं। वासवदत्ता और कांचनमाला पुनः आकर राजा और सागरिका की प्रेम भरी बातें सुनते हैं। रानी वासवदत्ता राजा और सागरिका की बातें सुनकर क्रोधित होकर राजा के सम्मुख जाती हैं। राजा महारानी से क्षमायाचना करता है, लेकिन महारानी विदूषक और सागरिका को लतापाश में बाँधने के लिए कांचनमाला से कहती है। वासवदत्ता सागरिका और कांचनमाला को लेकर राजमहल चली जाती है। राजा लज्जित एवं दुःखी होकर चला जाता है। इस प्रकार संकेतो नामक तृतीय अंक समाप्त हो जाता है।

चतुर्थ अंक में राजा उदयन राज सिंहासन पर बैठे हैं। वासवदत्ता अत्यधिक प्रसन्न हैं। परन्तु राजा सागरिका को नहीं भूले हैं। बसन्तक महारानी की कैद से छूटकर राजा के पास आता है। और बताता है कि सागरिका को महारानी ने उज्जयिनी भेज दिया है। राजा विदूषक द्वारा दिखायी गई सागरिका की रत्नमाला देखकर अत्यधिक दुःखी होते हैं, और सोचते हैं कि अब सागरिका के दर्शन करने दुर्लभ हैं। उसी समय रूमण्वान् का भांजा विजयवर्मा आकर बताता है कि रूमण्वान् ने विध्यांचल में कई दिनों के युद्ध के पश्चात् शत्रुओं को परास्त कर दिया और वह शीघ्र ही वापस आ रहे हैं।

उज्जयिनी निवासी संवरसिद्धि नामक ऐन्द्रजालिक महाराज उदयन के पास आता है। ऐन्द्रजालिक राजा को इच्छानुसार जादू दिखाने का वादा करता है। विदूषक ऐन्द्रजालिक से सागरिका के दर्शन कराने को कहता है। तभी सिंहलेश्वर के श्रेष्ठ मंत्री वसुभूति के आने से इन्द्रजाल या जादू समाप्त हो जाता है। वसुभूति को विदूषक के गले में पड़ी रत्न माला देखकर रत्नावली की माला की याद आ जाती है। वसुभूति राजा को रत्नावली से सम्बन्धित भविष्यवाणी एवं लावणक ग्राम में अग्नि की अफवाह एवं यौगन्धरायण के योजनानुसार रत्नावली को लाने का वृत्तान्त बताता है। इसी समय राजमहल के अन्तःपुर या रनिवास में आग लग जाने की सूचना आती हैं वासवदत्ता के कहने पर रनिवास में बंधी हुई सागरिका को महाराज उदयन सकुशल अग्नि से निकाल लाते हैं। राजा जैसे ही अग्नि से बाहर आते हैं। तो अग्नि बुझ जाती है। राजा आश्चर्यचकित हो जाते हैं। यह ऐन्द्रजालिक द्वारा दिखाया गया खेल था। सागरिका को अमात्य वसुभूति और बाभ्रव्य पहिचान जाते हैं। महारानी वासवदत्ता बताती है, सागरिका तथा रत्नों की माला दोनों सागर से प्राप्त हुए हैं। वसुभूति सागरिका को महाराज सिंहलेश्वर की पुत्री रत्नावली बताते हैं। रानी वासवदत्ता सागरिका को बहन रत्नावली पुकार कर गले लगाती है। इतने में यौगन्धरायण आकर राजा को चक्रवर्ती सम्राट बनाने की सम्पूर्ण योजना को विस्तृत रूप में बताते हैं। यौगन्धरायण महाराज से इस कार्य के लिए क्षमा मांगते हैं। राजा क्षमा कर देते हैं।

यौगन्धरायण का सागरिका को अन्तःपुर में रखना तथा ऐन्द्रजालिक द्वारा अन्तःपुर में आग लगवाना राजा तथा वसभूति को रत्नावली के दर्शन कराने के लिए आवश्यक था। वासवदत्ता रत्नावली और राजा उदयन का विवाह करवा देती है। बाभ्रव्य और यौगन्धरायण का परिश्रम सफल हो जाता है। राजा उदयन के चक्रवर्ती सम्राट बनने एवं राज्य की सीमा विस्तार से सभी प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार ऐन्द्रजालिक नामक चतुर्थ अंक के साथ रत्नावली नाटिका समाप्त हो जाती है।[10]

➢ नाटिका का नामकरण :–

महाकवि हर्ष ने " **रत्नावली** " नाटिका का नामकरण राजा उदयन की प्रेमिका एवं सिंहलेश्वर की पुत्री रत्नावली और नाटिका की नायिका के नाम पर किया है। नायिका रत्नावली के गले में रत्नों की सुन्दर माला थी। कौशाम्बी आते समय वह देवात् मार्ग में समुद्र में जलयान टूट जाने पर अपने संरक्षकों से बिछड़ जाती है। एक व्यापारी उसको यौगन्धरायण को सौंपता है। यौगन्धरायण उसकी रत्नों वाली माला देखकर समझ जाता है कि यह राजकुमारी रत्नावली है। वह रत्नावली को अन्तःपुर में रखवा देता है।

चतुर्थ अंक में अन्तःपुर में आग लगने पर राजा जब सागरिका को सुरक्षित निकाल लाते हैं। तो मंत्री वसुभूति उसकी रत्नो वाली माला देखकर उसे पहचान जाते हैं। यहीं राजकुमारी रत्नावली है। नाटिका में दो स्थानों पर राजकुमारी रत्नावली को उसकी माला से पहचाना जाता है। इसलिए नाटिका का नाम "**रत्नावली**" सार्थक है।[11]

➢ नाटिका का कथास्रोत :–

महाकवि हर्ष के समय में उदयन की लोककथाएँ अत्यधिक प्रसिद्ध थी। रत्नावली नाटिका भी उदयन और रत्नावली के प्रेम की कथा है।

अधिकांश विद्वान् रत्नावली नाटिका का मूल गुणाढ्य कृत बृहत्कथा को मानते हैं। बृहत्कथा सम्प्रति अपने मौलिक रूप में मिलती नहीं है। परन्तु बृहत्कथा के रूपान्तर सोमदेव विरचित कथासरित्सागर से रत्नावली नाटिका की कथावस्तु मिलती

जुलती है। इसके साथ ही साथ महाकवि **भास के स्वप्नवासवदत्तम्** नामक नाटक का भी इस पर प्रभाव पड़ता है। एतद्तिरिक्त महाकवि **कालिदास के मालविकाग्निमित्र** नामक नाटक का प्रभाव भी नाटिका पर पड़ा है। इन दोनों में मालविका और पद्मावती के साथ राजा उदयन का दूसरा विवाह होता है।[12]

बृहत्कथा, कथासरित्सागर, स्वप्नवासवदत्तम् अैर मालविकाग्निमित्र आदि कथाओं का प्रभाव भी हर्षदेव की रत्नावली में दिखायी देता है। महाकवि हर्षदेव ने अपनी नाटिका में सिद्धेश्वर द्वारा भविष्यवाणी करना, राजसभा में ऐन्द्रजालिक द्वारा जादू करना और कदली का चित्रफलक वर्णन करने मूल कथा स्त्रोत की कथा में कुछ परिवर्तन करके एक नयी कथा प्रस्तुत की है।[13]

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकवि हर्षवर्धन या हर्षदेव ने अपनी नाटिका रत्नावली के कथावस्तु के विकास के लिए ' **मूलकथास्त्रोत के रूप में बृहत्कथा, कथासरित्सागर, स्वप्नवासवदत्तम् और मालविकाग्निमित्र** ' नाटकों से सहयोग लिया है।

(घ) प्रियदर्शिका की कथावस्तु

प्रियदर्शिका महाकवि श्री हर्ष द्वारा रचित एक नाटिका है। इस नाटिका में चार अंक हैं। इस नाटिका में वत्सराज उदयन के अन्तःपुर की एक प्रेम कहानी चित्रित की गई है। इस नाटिका के नायक वत्सराज उदयन तथा नायिका दृढ़वर्मा कुमारी प्रियदर्शिका (आरण्यका) है।

प्रथम अंक में प्राचीन समय में कौशाम्बी नगरी के राजा वत्सराज उदयन राजदरबार में बैठे थे। उनकी प्रधान रानी वासवदत्ता थी जो महासेन प्रद्योत की कन्या थी। एक दिन वत्सराज के दरबार में एक कंचुकी ने आकर कहा – महाराज में महाराज दृढ़वर्मा का कंचुकी हूँ। राजा दृढ़वर्मा कलिंगराज से युद्ध में पराजित हो गये तथा बन्दी बना लिये गये हैं। अपनी कन्या प्रियदर्शिका को आपको सौपना चाहते थे। दृढ़वर्मा के बंनी हो जाने पर कंचुकी प्रियदर्शिका को उदयन के पास

पहुचाने का प्रयास करता है। प्रियदर्शिक को मार्ग में उसके पिता के मित्र विन्ध्यकेतु के घर पर उसे ठहराकर कंचुकी अगस्त्यतीर्थ में स्नान करने चले गया। कंचुकी के लौटने तक विन्ध्यकेतु पर आक्रमण कर उसका वध कर दिया था और प्रियदर्शिका भी वहाँ नहीं थी। बहुत देर तक ढूँढने के पश्चात् भी जब राजकुमारी नहीं मिली तो यह समाचार कहने कंचुकी उदयन के पास आया। समस्त वृत्तान्त बताकर वह अपने स्वामी के पास चला जाता है।

कुछ समय के बाद ही राजा उदयन का सेनापति विजयसेन आता है। विजयसेन महाराज से आपके कोप का फल विन्ध्यकेतु को भुगतना पड़ा। हमारे साथ उनसे वीरतापूर्ण युद्ध किया लेकिन चारों तरफ से सेना द्वारा घिर जाने पर वह मृत्यु को प्राप्त हुआ। विन्ध्यकेत्तु के मर जाने पर उसकी एक लड़की मिली, जो आपके सम्मुख प्रस्तुत की जा रही है। महाराज ने उस कन्या अर्थात् प्रियदर्शिक का नाम आरण्यका रख दिया। उसे महारानी वासवदत्ता के पास भेज दिया गया तथा महारानी से कहा इस कन्या को संगीत तथा अन्य कलाओं की शिक्षा दी जाए और जब यह विवाह योग्य अवस्था की हो जाए, तो इसके अनुरूप वर के अन्वेषण हेतु मुझे सूचना दे दी जाए।

द्वितीय अंक में राजा और विदूषक की आमोद–प्रमोद की वार्त्ता चल रही थी। राजा उदयन को वासवदत्ता से मिलने की उत्कण्ठा हुयी, विचार विमर्श के बाद तय हुआ कि धारागृहोद्यान की ओर चलते हैं। राजा जब भ्रमण करते हुए धारागृहोद्यान पहुँचे तो उन्होंने देखा महारानी की चेटी इन्दीवरिका और आरण्यका (प्रियदर्शिका) फूल चुनने के लिए धारागृहोद्यान आये हैं। इन्दीवरिका ने अपनी संगिनी आरण्यका से कहा कि महारानी की आज्ञा के अनुसार मैं शैफालिका के फूल चुनने जाती हूँ। मेरे आने तक तुम भी समीपवर्ती तालाब से थोड़े से कमल के फूल ले आओं। आरण्यका को यह आज्ञा अपमानजनक लगी। तथा वह फूल लेने के लिए चली गयी। राजा उदयन और विदूषक भी उस समय तालाब के समीप पहुँचे। विदूषक ने आरण्यका को देखकर कहा यह वनदेवी के सदृश मालूम पड़ रही है। उसने राजा से पूछा कि यह कौन है? राजा ने कहा कि मैं भी इसे नहीं पहचानता। इन्दीवरिका को वहाँ आते देखकर विदूषक ने राजा उदयन से कहा कि महारानी की चेटी

इन्दीवरिका इधर ही आ रही है। अतः इस झाड़ी में छिपकर ही हम इस सुन्दरी का अवलोकन करते हैं। वहाँ आकर इन्दीवरिका ने आरण्यका से कहा कि तुम कमल फूल चुनो मैं तब तक इस कमलपत्र पर शैफालिका पुष्प का संग्रह करती हूँ। उन दोनों की बातें सुनने से राजा को यह ज्ञात हुआ कि यह एक सम्भ्रान्त कुल की है।

इसी समय भ्रमरों ने आरण्यका को सताना प्रारम्भ किया। आरण्यका ने इन्दीवरिका को रक्षा हेतु पुकारा विदूषक ने राजा को आरण्यका की भ्रमरों के उपद्रव से बचाने के लिए भेजा। राजा ने जाकर भ्रमरो से आरण्यका की रक्षा की। आरण्यका ने पहले समझा कि यह इन्दीवरिका होगी लेकिन विदूषक के द्वारा बताने पर उसे ज्ञात हुआ कि वे राजा उदयन हैं और उसे लज्जा हुई । आरण्यका ने मन ही मन सोचा कि यह वहीं राजा उदयन हैं, जिनके निमित्त मेरे ने मुझे यहाँ भेजा था। इसी समय इन्दीवरिका आती है। उसे देखकर विदूषक संकेत द्वारा राजा को वहाँ से जाने के लिए कहते हैं। चेटी इन्दीवरिका और आरण्यका दोनों अन्तःपुर की ओर चली जाती हैं। आरण्यका को राजा से अत्यधिक स्नेह उत्पन्न होता है। वह पीछे मुढ़कर राजा को देखती हुयी जाती है। दोनों के चले जाने पर उदास राजा भी अन्तःपुर की ओर चले जाते हैं। क्योंकि संन्ध्या का समय हो जाता है।

तृतीय अंक में राजा के प्रति आरण्यका की आसक्ति बढ़ने लगती है और वह राजा से मिलने लिए बैचेन रहने लगती है। मनोरमा (आरण्यका की सखी) ने आरण्यका को समझाया जब तुम्हें राजा ने अपनी आंखों में बसा लिया है। तो वह स्वयं कोई ऐसा उपाय निकालेगें जिससे तुम उनसे मिल सको। आरण्यका मनोरमा से यद्यपि महाराज ने मुझे देखा है परन्तु रूपवती महारानी में उनकी प्रीति अधिक होगी। इसलिए राजा मेरी ओर आकृष्ट नहीं होगें। फलतः मेरा मरना अवश्यम्भावी है। मनोरमा ने उसे बताया कि महाराज तुम्हारे जैसी सुन्दर रूपवती कन्या के प्रति अत्यधिक आसक्ति रखते हैं। इसी समय आरण्यका को ढूँढता हुआ विदूषक वहाँ आया। मनोरमा ने विदूषक से कहा तुम राजा की प्रेयसी आरण्यका को ढूँढ रहे हो। जिस प्रकार राजा आरण्यका के लिए बैचेन है उससे दुगुनी बैचेनी हमारी प्रियसखी आरण्यका को है। विदूषक मुम्हारी सखी तो बड़ी लजीली या शर्मिली लगती है। फिर इसकी और राजा की भेंट कैसे होगी। इस पर मनोरमा ने विदूषक के कान में

मिलने की योजना बतायी। इसी बीच अन्तःपुरिकाओं द्वारा एक नाटक खेला गया। जिसे सांकृत्यायनी ने राजा और महारानी के परिणय प्रसंग को आधार बनाकर लिखा था। उस अभिनय में मनोरमा राजा की पात्र होगी और आरण्यका महारानी वासवदत्ता की पात्र बनेगी यह पहले तय हुआ। महारानी वासवदत्ता एवं सभी दर्शक नाटक देखने रंगमंच पर उपस्थित होते हैं। लेकिन राजा उदयन विदूषक के परामर्श से मनोरमा के स्थान पर स्वयं राजपरिधेय वस्त्र एवं आभूषण पहनकर अभिनय करने लगते हैं। आरण्यका ने वासवदत्ता के रूप में खूब सुन्दर अभिनय किया। इस प्रकार अभिनय के छल से दोनों प्रेमी–प्रेमिका ने अपना मनोरथ पूरा कर लिया। नाटक के अभिनय में कुछ बातें ऐसी हुई जिसे देखकर वासवदत्ता को यह शंका उत्पन्न हुई कि यह वास्तव में महाराज उदयन तो नहीं है। वासवदत्ता सज्जागृह में सो रहे विदूषक को देखकर महाराज भी यही कही होंगे। फिर महारानी ने सोये हुए विदूषक को जगाकर सम्पूर्ण नाटक का रहस्य जान लिया। वासवदत्ता आरण्यका तथा विदूषक को बन्धन में डाल दिया। राजा के अनुनय विनय पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह नाटक एक दूसरे ही नाटक में परिणत हो गया।

चतुर्थ अंक में राजा और रानी दोनों एक दूसरे से अप्रसन्न थे। एक दिन वासवदत्ता को माता अंगारवती का पत्र मिला। उस पत्र में अंगारवती की बहन के पति दृढ़वर्मा को कलिंगराज के बन्धन से छुड़ाने का निवेदन किया गया था। पत्र पढ़कर वासवदत्त चिन्ति हो गयी। राजा भी आरण्यका की मुक्ति के लिए चिन्ति थे एवं विचार–विमर्श करने लगे। रानी वासवदत्ता को मनाने के लिए उदयन रानी के पास जातेहै। क्योंकि रानी जब प्रसन्न होगी तभी वह आरण्यका को बन्धन मुक्त करेगी। वहाँ पहुँचने पर महाराज को वासवदत्ता पत्र के विषय में बताती है। महाराज उदयन दृढ़वर्मा की मुक्ति हेतु सेनापति विजयसेन को कलिग भेजते हैं।

कुछ समय उपरान्त् सेनापति विजयसेन तथा दृढ़वर्मा का कंचुकी महाराज को कलिंग विजय और दृढ़वर्मा को पुनः राज्य वापसी का सुखद समाचार सुनाते हैं। इसी समय खबर मिली कि आरण्यका द्वारा मद्य की जगह विष पीने से बेहोश हो गयी है। समाचार सुनकर महारानी अत्यधिक घबरा गई और उन्होंने आरण्यका को वहीं मंगवाया। महाराज से उसकी जान बचाने का अनुरोध किया, क्योंकि महाराज

नागलोक से विषचिकित्सा की जानकारी प्राप्त करके आये थे। आरण्यका को वहाँ लाने पर दृढ़वर्मा के कंचुकी ने आरण्यका को पहचान कर वास्तविक परिचय दिया। यह तो हमारी राजकुमारी प्रियदर्शिका है। जिससे महारानी अत्यधिक चिन्ति हो गयी। महारानी के बार–बार अनुरोध करने पर महाराज ने आरण्यका की चिकित्सा की। जिससे वह त्तकाल ही स्वस्थ हो गयी। सभी उपस्थित लोग खुश हो गये। इस अवसर पर कंचुकी ने दृढ़वर्मा का संकल्प महारानी को याद दिलाया। प्रियदर्शिका एवं महाराज के प्रेम को ध्यान में रखकर महारानी वासवदत्ता ने आरण्यका (प्रियदर्शिका) का हाथ महाराज उदयन के हाथ पर रख दिया। जिससे सभी लोग प्रसन्न हो जाते हैं। इस प्रकार भरत वाक्य के साथ नाटिका समाप्त हो जाती है।[14]

➢ नाटिका का नामकरण :–

महाकवि हर्ष ने **"प्रियदर्शिका"** नाटिका का नाम नाटिका की नायिका प्रियदर्शिका के आधार पर रखा है। नायिका अत्यन्त सौन्दर्यशाली एवं सर्वगुण सम्पन्न थी। इसलिए उसका नाम प्रियदर्शिका रखा गया है। प्रियदर्शिका राजा उदयन की प्रेमिका भी है। सम्पूर्ण कथावस्तु राजा उदयन और प्रियदर्शिका की प्रेम कथा पर आधारित है। इसलिए नाटिका का नाम **'प्रियदर्शिका'** सार्थक है।[15]

➢ नाटिका का कथास्रोत :–

श्रीहर्ष ने रत्नावली की भाँति ही इस नाटिका में भी उदयन कथा को जोड़ने का प्रयास किया है। प्रियदर्शिका नाटिका का मूल कथा स्रोत गुणाढ्य कृत बृहत्कथा को माना जाता है। सोमदेव विरचित कथासरित्सागर, भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् को भी प्रियदर्शिका का कथा स्रोत माना जाता है।[16]

इन कथा स्त्रोत की कथा में कुछ परिवर्तन करके महाकवि ने प्रियदर्शिका नाटिका की रचना की है। महाकवि श्रीहर्ष देव ने बृहत्कथा में वर्णित उदयन की प्रेमकथा को बड़े ही रोचक तथा आकर्षक रूप में समाज के समाने प्रस्तुत किया है।[17]

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि **बृहत्कथा तथा कथासरित्सागर एवं स्वप्नवासवदत्तम् ही प्रियदर्शिका नाटिका के मूलकथा स्त्रोत हैं।**

(ङ) तापसवत्सराज की कथावस्तु

महाकवि श्री अनङ्गहर्ष विरचित तापसवत्सराज रूपक की कथावस्तु ६ अंको में विभक्त है। इस रूपक में वत्सदेश के राजा उदयन तथा प्रद्योत कुमारी वासवदत्ता के प्रेम की कथा वर्णित है। यौगन्धरायण राजा उदयन के प्रमुख मंत्री है। इस रूपक के अन्य पात्र वसन्तक, विदूषक, मंत्री रूमण्वान्, द्वितीय नायिका पद्मावती, सांकृत्ययानी, लामकायन आदि है।

नाटक के प्रारम्भ में विदूषक द्वारा यह बताया जाता है कि पाञ्चाल नरेश आरूणि वत्स प्रदेश पर आक्रमण करने की तैयारी कर चुका है। जबकि वत्स नरेश उदयन इस आक्रमण से अनभिज्ञ है वह सुख–विलास में रत है। वत्स नरेश कौमुदी महोत्सव की तैयारियाँ करा रहे है किन्तु राजा उदयन के प्रमुख मंत्री यौगन्धरायण को आरूणि के द्वारा होने वाले आक्रमण का अनुमान था।

यौगन्धरायण के शिष्य से यह ज्ञात होता है कि यौगन्धरायण ने रूमण्वान् तथा वासवदत्ता के पिता राजा प्रद्योत को अपने विश्वास में लेकर आगे की योजना की सफलता की सारी तैयारियाँ कर ली है। अब केवल महारानी वासवदत्ता को इस योजना की सफलता के लिये विश्वास में लेना है। अतः यौगन्धरायण तत्काल महारानी वासवदत्ता से मिलने जाता है। यौगन्धरायण के पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार राजा प्रद्योत का पत्रवाहक एक पत्र लाता है जिसमें वासवदत्ता के पिता उसे समझाते हैं कि वह राज–काज से विमुख एवं भोग–विलास में रत अपने पति को नहीं समझा रही है। तथा यह आशा करते है कि वह इस योजना की सफलता के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने को भी उद्यत रहेगी। इस अवसर का लाभ उठाकर यौगन्धरायण महारानी से अपनी योजना में सहायता करने का वचन लेकर चला जाता है। तभी राजा अन्तःपुर में आते है।

वासवदत्ता भावी वियोग की योजना से दुःखी होकर कुछ भी श्रृंगार नहीं करती। राजा के पूछने पर चेटी राजा से कहती है कि " पिता की ओर से पत्र आने के कारण रानी कुछ उदास है, सारी स्थिति को संभाल लेती है।" राजा के पास शिकारियों से सूचना आती है कि जंगल में शिकार के योग्य जानवरों की स्थिति अत्यधिक है। फिर राजा रानी से विदा लेकर शिकार खेलने चले जाते है।

तापसवत्सराज के द्वितीय अंक के प्रारम्भ में मंत्री रूमण्वान् का भाई विनीतभद्र कहता है कि मंत्री यौगन्धरायण अपनी पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार रानी वासवदत्ता को राजमहल से ले गये और इसके बाद अन्तःपुर में आग लगा दी गई।

राजा उदयन शिकार करके राजमहल लौटते है। तभी रनिवास या अन्तःपुर में अग्निकाण्ड की सूचना पाकर वह मंत्री रूमण्वान् और विदूषक के साथ अन्तःपुर में पहुँचते है। अन्तःपुर पहुँचकर राजा को यह ज्ञात होता है कि वासवदत्ता भी इस अग्निकाण्ड में जलकर मर गयी। राजा भी उसी अग्निकाण्ड में जलकर मर जाना चाहता है, तथा वासवदत्ता के वियोग में अत्यन्त करूण विलाप करता है। रानी के पालित मृगपोत एवं शुक को देखकर उसका परिवेदन और भी उद्दीप्त हो उठता है। मन्त्री रूमण्वान् और विदूषक उसे सान्त्वना देते है, तभी राजा वासवदत्ता की याद में मूर्छित हो जाते है। जब राजा को चेतना आती है, तो उसी समय महासेन का लेख–वाहक भी वहाँ आ जाता है। इससे राजमहल में शोक का वातावरण और भी अधिक गम्भीर हो जाता है।

इसके बाद राजा जब यौगन्धरायण से मिलने की इच्छा व्यक्त करता है तो रूमण्वान् कहता है महाराज मंत्री यौगन्धरायण महारानी वासवदत्ता को अग्नि से बचाने के प्रयास में स्वयं भी उसी अग्नि में जलकर मर गये। यह बात सुनकर राजा को पुनः दुःख होता है और वह यौगन्धरायण के वियोग में विलाप करते हुए मूर्छित हो जाते है। पुनः चेतना आने पर राजा उस लोक में जाना चाहते है। जहाँ देवी वासवदत्ता और महामन्त्री यौगन्धरायण चले गये है, लेकिन मंत्री रूमण्वान् अपनी पूर्व नियोजित योजना के अनुसार राजा से अनुरोध करता है कि पहले उन्हें सिद्ध जनों

के दर्शन करने के लिए प्रयाग चलना चाहिए। राजा रूमण्वान् के अनुरोध को मानकर प्रयाग चलने को तैयार हो जाते है। तभी पता चलता है कि रूमण्वान् का शिष्य "लामकायन" पहले से ही तापस वेश में प्रयाग पहुँच चुका है।

तृतीय अंक में विष्कम्भक के अनुसार प्रयाग पहुँचने पर रूमण्वान् का शिष्य लामकायन राजा उदयन से कहता है कि वासवदत्ता के समान ही किसी कन्या के साथ विवाह करने के उपरान्त ही वासवदत्ता के साथ उसका पुनः संगम या पुनः मिलन हो सकता है। अब राजा मरने का विचार त्यागकर विरक्त तपस्वी होकर राजगृह को लौट जाते है। रूमण्वान् राजा की इस बात से कुपित होकर राजधानी वापस आ जाते है कि वह अपने पूर्वजों के द्वारा निर्धारित मार्ग का उल्लंघन करके इस अवस्था में ही सन्यास ले रहे है। तत्पश्चात् लामकायन के शिष्य से यह पता चलता है कि परिव्राजिका 'सांकृत्यायनी' ने राजगृह पहुँचकर राजकुमारी पद्मावती को राजा उदयन की प्रतिकृति अर्थात् चित्र दिखाकर एवं उसके अनेकशः गुण बताकर, राजकुमारी के मन में राजा के प्रति प्रेम उत्पन्न कर देती है। अब राजकुमारी पद्मावती राजा उदयन के प्रतिकृति या चित्र की देवमूर्ति के समान पूजा करने लगी। इधर विदूषक भी राजा को लेकर राजगृह के तपोवन में पहुँच जाता है।

यौगन्धरायण ब्राह्मण वेश में वासवदत्ता को अपनी प्रोषितपतिका बहन बताकर उसे पद्मावती के पास छोड़कर चला जाता है। वासवदत्ता जब पद्मावती से उसके तापस वेश का कारण पूछती है तो वह राजा उदयन से प्रेम करने एवं उनकी प्रतिकृति की मन्दिर में रखकर पूजा करना तापस वेश का कारण बताती है। तथा वासवदत्ता को मन्दिर में रखी उदयन की प्रतिकृति का साक्षात्कार कराती है। उसी समय वासवदत्ता की भेंट सांकृत्यायनी से होती है। राजा के मध्याहन के समय वहाँ आने के कारण सांकृत्यायनी वासवदत्ता को अतिथि सत्कार के बहाने वहाँ से ले जाती है।

तद् उपरान्त तापस वेश विदूषक और तापस वेश में राजा वहाँ आते है। दोपहर में विश्राम करने का बहाना बनाकर विदूषक राजा को पद्मावती के तापस

वेश का दर्शन कराने के लिए उस स्थान पर ले जाता है। जहाँ पद्मावती तापसी वेश में राजा की प्रतिकृति की आराधना कर रही होती है। जब वे दोनों उस स्थान पर प्रवेश करना चाहते है, तो राजकुमारी पद्मावती की सखी उन्हें वहाँ प्रवेश करने से रोकती है और कहती है– मगधराज दर्शक की बहिन पद्मावती वत्सराज उदयन के गुणों पर मुग्ध होने के कारण उस राजा के तपस्वी हो जाने पर स्वयं भी तपस्विनी बनकर यहीं उनके प्रतिकृति या चित्र की आराधना कर रही है। राजा चेटी की बात में कोई रूचि न दिखाकर वहाँ से अन्यत्र जाना चाहता है परन्तु विदूषक अत्यधिक थकान का बहाना बनाकर वहीं जमीन पर बैठ जाता है। विदूषक चेटी को बताते है कि यह नवागन्तुक स्वयं राजा उदयन है। चेटी पद्मावती के पास जाकर कहती है कि कोई अतिथि तपोवन में आये है । पद्मावती पूजा का समान लेकर अतिथि सत्कार को आती है, तो राजा उदयन पद्मावती के तापस वेश को देखकर विचलित हो जाते है। पद्मावती भी राजा को पहचान कर उन्हें अर्ध्य देने में संकोच करती है, पर विदूषक के कहने पर राजा उसकी पूजा को स्वीकार कर लेते है। लेकिन वासवदत्ता की याद आने पर दुःखित हो जाते है। पद्मावती भी मध्याहन क्रिया के बहाने वहाँ से चली जाती है।

चतुर्थ अंक में रूमण्वान् का दूत 'सिद्धार्थक' राजगृह की गतिविधियों को जानने के लिए सांकृत्यायनी के पास आता है। राजा तथा पद्मावती के विवाह की योजना बनाने के लिए सांकृत्यायनी को अमात्य रूमण्वान् का सन्देश सुनाता है।

राजा उदयन के लिए बनाया गया पद्मावती का तपोवेश व उसकी कष्टसाधना राजा को बहुत विचलित करने लगती है। राजा पद्मावती के पास विदूषक को भेजकर उसे तपोवेश या तापसी का वेश, पूजा अर्चना करने तथा मन्दिर में प्रतिकृति की अराधना करने से रोकने या इन कर्मो को त्यागने को कहता है। लेकिन विदूषक के लौटने पर पद्मावती के जिस तापसी या सन्यासिनी रूप का वर्णन किया जाता है। उससे राजा का हृदय और भी अधिक विचलित हो उठता है। विदूषक राजा को प्रयाग के सिद्ध तपस्वी की उस भविष्यवाणी की याद दिलाता है कि सिद्ध तपस्वी ने कहा था कि – वासवदत्ता के समान ही किसी कन्या के साथ विवाह करने के उपरान्त ही वासवदत्ता के साथ उसका मिलन सम्भव है। विदूषक

राजा से कहता है कि यदि उन्होंने अभी जाकर पद्मावती को विवाह का आश्वासन न दिया तो वह अपने प्राण त्याग देगी। इस इस बहाने से राजा को पद्मावती के पास ले जाता है। लेकिन राजा का मन अभी वासवदत्ता की स्मृति में ही डूबा रहता है।

पद्मावती राजा की साधना में अपने आपको असफल समझकर अत्यन्त दुःखी हो जाती है। वासवदत्ता और सांकृत्यायनी तापसी पद्मावती को समझाने का प्रयास करते है, परन्तु पद्मावती का हृदय उसे अपनी असफलता पर धिक्कारता है। तापसी पद्मावती किसी बहाने से वासवदत्ता और सांकृत्यायनी को वहाँ से बाहर भेजती है और स्वयं लतामण्डप में प्रवेश करके माधवी लता का पाश बनाकर आत्महत्या करने का प्रयास करती है। इतने में विदूषक राजा को लेकर लतामण्डप में पहुँचता है और पद्मावती को आत्महत्या के दुःसाहस करने से रोकता है। इसके बाद कंचुकी राजा और पद्मावती के विवाह की मंगल सूचना देता है।

तासवत्सराज रूपक के पाँचवें अंक के प्रारम्भ में मूल ग्रन्थ के खण्डित होने से कथा का ठीक–ठीक रूप स्पष्ट न होते हुए भी इतना अवश्य ज्ञात होता है कि वासवदत्ता आकर विदूषक को जगाती है और विदूषक राजा के पास जाता है। राजा पद्मावती के साथ अपने प्रिय मिलन को याद करता है। वह वासवदत्ता को भी नहीं भूलता है। वासवदत्ता का प्रसंग आते ही विदूषक से पहले कहता है कि वासवदत्ता अभी मुझे नींद से जगाकर चली गई फिर एकदम अपनी बात को बदलकर कहता है कि मैंने वासवदत्ता को स्वप्न में देखा।

इस वार्त्तालाप के बाद राजा तथा विदूषक रानी पद्मावती के पास जाते हैं। तभी राजा दर्शक का भेजा हुआ सन्देश वाहक कुञ्जरक वहाँ आता है और आरूणि के साथ हुए युद्ध का विस्तृत वर्णन करता है। युद्ध करते समय आरूणि अन्त में बन्दी बना लिया जाता है और उसकी सेना की युद्ध में पराजित हो जाती है। हमारी सेनाओं को युद्ध विजय का सुखद सन्देश सुनाया गया। इस युद्ध विजय का समाचार सुनकर राजा उदयन अत्यधिक प्रसन्न होते है। युद्ध विजय होने पर विदूषक राजा को सलाह देता है कि अब आपको आरूणि को दण्ड देने तथा अपने

सहायक राजा दर्शक गोपाल और वासवदत्ता के भाई पालक को धन्यवाद देने के लिए कौशाम्बी वापिस जाना चाहिये। परन्तु राजा सिद्ध तपस्वी की वाणी में विश्वास करके प्रयाग में वासवदत्ता के पुनर्मिलन की आशा करता है। और वह पहले प्रयाग होकर जाने की स्वीकृति देता है।

रूपक के षष्ठ अंक के प्रारम्भ में प्रवेशक यह बताता है कि पद्मावती के पास रहने वाली ब्राह्मणी वेशधारी स्त्री (वासवदत्ता) को उसका भाई (यौगन्धरायण) आकर वहाँ ले गया है। वासवदत्ता व्यर्थ में आर्य पुत्र (उदयन) को योजनानुसार दुःखी करने से स्वयं दुःखी एवं लज्जित होती है। अब उसे आर्य पुत्र अर्थात् उदयन एवं अपने बन्धुबान्धवों के सम्मुख जाने पर लज्जा की अनुभूति होने लगती है। इस कारण से वासवदत्ता मरने को उद्यत हो जाती है।

अमात्य यौगन्धरायण उसे ऐसा करने के प्रयास से रोकते है। इसी समय सांकृत्यायनी की शिष्य आकर यौगन्धरायण को बताती है कि कौशाम्बी को जाते हुए राजा उदयन यहाँ प्रयाग में पहुँच चुके है और अब तक वासवदत्ता के ना मिलने से निराश होकर त्रिवेणी संगम में अपने प्राण उत्सर्ग करने को उद्यत है। अतः राजा उदयन तथा रानी वासवदत्ता के मिलन कराने का यह उपयुक्त अवसर है।

इधर यौगन्धरायण चिता में जलकर मरने के लिए वासवदत्ता को त्रिवेणी संगम की ओर ले जाता है। उधर विदूषक और पद्मावती के साथ राजा उदयन भी त्रिवेणी संगम में जीवनोत्सर्ग करने के लिए आते है। यौगन्धरायण वासवदत्ता के लिए चिता लगवाकर उसमें अग्नि प्रज्जवलित करवाता है और इधर राजा के कहने पर सेवकों द्वारा चिता का निर्माण ना करने से राजा उसी चिता में जाकर जल जाना चाहता है। जब वह उसकी प्रदक्षिणा कर रहा होता है तो यौगन्धरायण राजा को रोकता है और कहता है यह तो मेरी बहिन की चिता है जो कि पति को दुःखी ना देख सकने के कारण मरने के लिए उद्यत है। यह सुनकर राजा रूक जाता है। उसी समय विदूषक राजा का ध्यान चिता के समीप खड़े ब्राह्मण की ओर आकृष्ट करता है। राजा ब्राह्मण वेशधारी यौगन्धरायण को पहचान लेता है। रानी पद्मावती भी रानी वासवदत्ता को पहचान लेती है।

यौगन्धरायण राजा उदयन से कहता है पाञ्चाल नरेश आरूणि के विनाश के लिए हम लोगों ने यह सारा अपराध किया है। देवी वासवदत्ता और यौगन्धरायण राजा से क्षमा याचना करते है। तभी रूमण्वान् भी वहाँ पहुँच जाता है। राजा रूमण्वान् से कहता है तुम से भेंट हो गई तथा फिर से देवी वासवदत्ता तथा खोई हुई पृथ्वी दोनों मिल गयी। शत्रुओं को जीत लिया है। महाराज दर्शक से सम्बन्ध हो गये है। राजा अत्यधिक प्रसन्न होता है। इस प्रकार रूपक का सुखद अन्त हो जाता है।[18]

➢ नाटक का नामकरण :–

महाकवि अनंगहर्ष ने तापसवत्सराज नाटक का नामकरण **वत्सराज उदयन के तापस वेश धारण करने के आधार** पर किया। वत्सराज उदयन वासवदत्ता और यौगन्धरायण के वियोग से दुःखी होकर प्रयाग जाते है। प्रयाग में सिद्ध पुरूष के कहने पर कि कुछ समय बाद वासवदत्ता से मिलन हो सकता है। परन्तु आपको सन्यासी का वेश धारण करना होगा। द्वितीय विवाह वासवदत्ता के समान कन्या से करने पर मिलन सम्भव है । वत्सराज उदयन संन्यासी या तापस का वेश धारण कर राजगृह चले जाते है। जहाँ उन्हें राजकुमारी पद्मावती भी तापसी वेश में दिखाई देती है। उदयन का पद्मावती से द्वितीय विवाह हो जाता है। नाटक के अन्त में प्रयाग पहुँचकर राजा उदयन अपने प्राण त्यागना चाहते है। परन्तु विदूषक रानी वासवदत्ता और यौगन्धरायण को सन्यासी वेश मे पहचान लेता है। राजा उदयन और वासवदत्ता का मिलन हो जाता है।[19]

अतः राजा उदयन, राजकुमारी पद्मावती और विदूषक के संन्यासी या तापस–तापसी वेश धारण करने के आधार पर नाटक का नाम तापसवत्सराज उपयुक्त तथा कथानुकूल है।

➢ तापसवत्सराज का कथा स्रोत :–

संस्कृत साहित्य के अनेक महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, नीति कथाओं, कथाओं, कथाओं और रूपक, उपरूपकों के कथा स्त्रोत रामायण, महाभारत, वृहत्कथा ग्रन्थ रहे है। जिन्होंने सम्पूर्ण उत्तरवर्ती काव्य नाट्य साहित्य को जीवन प्रदान किया है। ये तीनों ही महाकाव्य उपजीव्य काव्य माने गये हैं।

तापसवत्सराज की कथा का मूल स्त्रोत भी वृहत्कथा को ही माना जाता है। क्योंकि वृहत्कथा के संक्षिप्त संस्करण– 'कथासरित सागर' एवं 'वृहत्कथा मंजरी' की रचना से पूर्व ही तापसवत्सराज नाटक की रचना हो चुकी थी। तापसवत्सराज की रचना से पूर्व ही उदयन और वासवदत्ता की प्रेमकथा का चित्रण अनेक कथाओं तथा ग्रन्थों में हो चुका था।

जैन और बौद्ध साहित्य में निरूपित प्रसंगों के अतिरिक्त भास, सुबन्धु और श्री हर्ष जैसे रूपककार भी इस विषय में अपने ग्रन्थों की रचना कर चुके हैं। कालिदास और भवभूति जैसी प्रतिभाएँ नाट्य के क्षेत्र में मार्ग–प्रदर्शन पहले ही कर चुकी थी। अतः निश्चित रूप से यह कहना भी कठिन ही है, कि अनङ्गहर्ष ने 'वृहत्कथा ' से ही अपने कथा सूत्र को ग्रहण किया है। तापसवत्सराज, स्वप्नवासवदत्तम् एवं कथासरित् सागर की कथावस्तु की पारस्परिक तुलना करने से यह ज्ञात होता है कि कथावस्तु की दृष्टि से यह 'स्वप्नवासवदत्तम्' की अपेक्षा 'कथासरित् सागर' तथा वृहत्कथा मंजरी के अधिक निकट है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि श्री अनङ्गहर्ष ने वृहत्कथा से ही अपनी कथा का स्त्रोत लिया हो और अपनी नाट्य कल्पना, उद्भावनाओ और संवाद कौशल से उसे तापसवत्सराज के रूप में प्रस्तुत कर दिया हो।[20]

अतः वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों की कथावस्तु अत्यन्त रोचक एवं मंनोरजनात्मक है। इसलिए यह सभी रूपक अत्यन्त प्रसिद्ध एवं लोक प्रिय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्वप्नवासवदत्तम्, त्रिपाठी डॉ० रूपनारायण, प्रस्तावना पृ०सं०– १०,११,१२,१३
2. स्वप्नवासवदत्तम्, त्रिपाठी डॉ० रूपनारायण, प्रस्तावना पृ०सं०– १४
3. स्वप्नवासवदत्तम्, त्रिपाठी डॉ० रूपनारायण, प्रस्तावना पृ०सं०– १५
4. भास और सोमदेवभट्ट का उदयन,महथा डॉ०निवारण,पृ०सं०– २५
5. भास और सोमदेवभट्ट का उदयन,महथा डॉ०निवारण,पृ०सं०– २५–२६
6. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रायःडॉ० गंगासागर, प्रथम अंक, पद्य सं०– १६,
7. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रायःडॉ० गंगासागर, प्रस्तावना पृ०सं०– १७–२६
8. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रायःडॉ० गंगासागर, प्रस्तावना पृ०सं०– २६–२७
9. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रायःडॉ० गंगासागर, प्रस्तावना पृ०सं०– २७
10. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रायःडॉ० गंगासागर, प्रस्तावना पृ०सं०– २८
11. रत्नावली, द्विवेदी डॉ० शिवबालक, प्रस्तावना पृ०सं०– ५–६
12. रत्नावली, द्विवेदी डॉ० शिवबालक, प्रस्तावना एवं प्रथम अंक
13. रत्नावली, द्विवेदी डॉ० शिवबालक, कथावस्तु एवं प्रस्तावना पृ०सं०– १०,
14. रत्नावली, द्विवेदी डॉ० शिवबालक, प्रस्तावना पृ०सं०– १०–११
15. प्रियदर्शिका, मिश्रः पण्डित श्रीरामचन्द्र, प्रस्तावना पृ०सं०– १२–१४
16. प्रियदर्शिका, मिश्रः पण्डित श्रीरामचन्द्र, प्रस्तावना पृ०सं०– १०
17. प्रियदर्शिका, मिश्रः पण्डित श्रीरामचन्द्र, प्रस्तावना पृ०सं०– ६–१०
18. तापसवत्सराजचरितम्, उनियाल प्रो० इन्द्रदत्त, प्रस्तावना पृ०सं०– ११–१४
19. तापसवत्सराजचरितम्, उनियाल प्रो० इन्द्रदत्त, प्रस्तावना पृ०सं०– १३–१४
20. तापसवत्सराजचरितम्, उनियाल प्रो० इन्द्रदत्त, प्रस्तावना पृ०सं०–१५– १६